ISSN: 2249-7196
IJMRR/Jan-March. 2023/ Volume 13/Issue 1/1-8
बसंत कुमार सिंह / International Journal of Management Research & Review

झारखंड के पलामू जिले की नगरीय बनावट और समाजिक संरचना का भू-स्थानिक अध्ययन

बसंत कुमार सिंह[1], डॉ. राम सनेही पाल[2]
शोधार्थी, भूगोल विभाग, श्री सत्यसाई प्रौद्योगिकी और चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, सीहोर मध्य प्रदेश[1]
पर्यवेक्षक, भूगोल विभाग, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश[2]

सार
पलामू जिला झारखंड राज्य के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई है जिसकी स्थापना 1892 में हुई थी। यह जिला अपनी विशिष्ट नगरीय संरचना और बहुआयामी सामाजिक संगठन के लिए जाना जाता है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य पलामू जिले की नगरीय बनावट, जनसांख्यिकीय विशेषताओं, सामाजिक संरचना तथा भू-स्थानिक वितरण का व्यापक विश्लेषण करना है। यह अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है जिसमें जनगणना 2011 के आंकड़े, सरकारी रिपोर्ट तथा प्रकाशित शोध पत्रों का उपयोग किया गया है। पलामू जिले में नगरीय जनसंख्या का अनुपात निम्न है तथा सामाजिक संरचना में जनजातीय और अनुसूचित जाति समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि जिले में केवल 11.65% जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है। नगरीकरण की धीमी गति, सीमित आधारभूत संरचना और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ जिले के विकास में बाधक हैं। पलामू में संतुलित नगरीय विकास और सामाजिक समावेशन की आवश्यकता है।
मुख्य शब्द: पलामू जिला, नगरीय संरचना, सामाजिक संरचना, भू-स्थानिक विश्लेषण, जनसांख्यिकी

1. प्रस्तावना

पलामू जिला झारखंड राज्य के पलामू प्रमंडल का एक महत्वपूर्ण जिला है जिसकी स्थापना 1 जनवरी 1892 को ब्रिटिश शासनकाल में हुई थी (कुमार एवं सिंह, 2015)। यह जिला झारखंड के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है और इसका मुख्यालय मेदिनीनगर (पूर्व नाम डाल्टनगंज) है। पलामू का भौगोलिक विस्तार 23°50' से 24°8' उत्तरी अक्षांश तथा 83°55' से 84°30' पूर्वी देशांतर के मध्य है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4,393 वर्ग किलोमीटर है जिसमें से 4,308.56 वर्ग किलोमीटर ग्रामीण क्षेत्र और मात्र 84.44 वर्ग किलोमीटर नगरीय क्षेत्र है (जनगणना आयुक्त, 2011)। पलामू जिले की सीमाएँ उत्तर में बिहार राज्य से, दक्षिण में लातेहार जिले से, पूर्व में चतरा जिले से तथा पश्चिम में गढ़वा जिले से लगती हैं। जिले में उत्तरी कोयल और औरंगा प्रमुख नदियाँ प्रवाहित होती हैं जो स्थानीय अर्थव्यवस्था और जल संसाधनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं (शर्मा, 2018)। ऐतिहासिक दृष्टि से पलामू का विशेष महत्व रहा है क्योंकि यहाँ चेरो राजवंश ने 16वीं से 18वीं शताब्दी तक शासन किया था। राजा मेदिनी राय के शासनकाल को पलामू का स्वर्ण युग माना जाता है (वर्मा, 2012)।

जनगणना 2011 के अनुसार पलामू जिले की कुल जनसंख्या 19,39,869 थी जिसमें 10,06,302 पुरुष और 9,33,567 महिलाएँ सम्मिलित थीं। जिले का जनसंख्या घनत्व 442 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। विगत दशक 2001-2011 में जनसंख्या वृद्धि दर 26.17% रही जो राज्य के औसत से अधिक है (भारत की जनगणना, 2011)। पलामू की सामाजिक संरचना अत्यंत विविधतापूर्ण

है जिसमें अनुसूचित जाति की जनसंख्या 5,36,382 (27.65%) तथा अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 1,81,208 (9.34%) है। यहाँ मुख्य रूप से उरांव, मुंडा, खरवार और चेरो जनजातियाँ निवास करती हैं (सिन्हा एवं पांडेय, 2019)। नगरीकरण के संदर्भ में पलामू एक अल्प नगरीकृत जिला है जहाँ केवल 11.65% जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है जबकि 88.35% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। जिले में कुल 9 नगर पालिकाएँ और 20 प्रखंड हैं (झारखंड सरकार, 2013)। नगरीय क्षेत्रों में साक्षरता दर 80.54% है जो ग्रामीण साक्षरता दर 61.30% से काफी अधिक है। पलामू की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है परन्तु यहाँ कोयला, चूना पत्थर, बॉक्साइट और लौह अयस्क जैसे खनिज संसाधन भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं (मिश्रा, 2017)। प्रस्तुत शोध पत्र में पलामू जिले की नगरीय बनावट, सामाजिक संरचना, जनसांख्यिकीय विशेषताओं तथा भू-स्थानिक वितरण का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

2. साहित्य समीक्षा

पलामू जिले की नगरीय संरचना और सामाजिक विशेषताओं पर अनेक विद्वानों ने शोध कार्य किए हैं। कुमार एवं सिंह (2015) ने अपने अध्ययन में पलामू के ऐतिहासिक विकास और प्रशासनिक संरचना का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने बताया कि पलामू की स्थापना 1892 में लोहरदगा जिले से पृथक होकर हुई थी और यह क्षेत्र बंगाल प्रेसीडेंसी का भाग था। भारत की जनगणना (2011) के आंकड़ों के अनुसार पलामू में नगरीकरण की दर अत्यंत निम्न है। जनगणना आयुक्त (2011) की रिपोर्ट में स्पष्ट किया गया है कि जिले में केवल 2,26,003 लोग नगरीय क्षेत्रों में निवास करते हैं जो कुल जनसंख्या का मात्र 11.65% है। शर्मा (2018) ने अपने शोध में पलामू की भौगोलिक संरचना का अध्ययन किया और बताया कि जिले की भौगोलिक स्थिति, वन क्षेत्र और जल संसाधन नगरीय विकास को प्रभावित करते हैं। सामाजिक संरचना के संदर्भ में सिन्हा एवं पांडेय (2019) ने उल्लेख किया है कि पलामू में जनजातीय समुदाय की जनसंख्या 1,81,208 है जो जिले की कुल जनसंख्या का 9.34% है। झारखंड सरकार (2013) की रिपोर्ट में बताया गया है कि जिले में उरांव, मुंडा, खरवार और चेरो प्रमुख जनजातियाँ हैं। वर्मा (2012) ने चेरो राजवंश के इतिहास पर विस्तृत शोध किया है और बताया कि चेरो शासकों ने पलामू में 150 वर्षों तक शासन किया।

मिश्रा (2017) ने पलामू की आर्थिक संरचना पर अध्ययन करते हुए बताया कि जिले में कृषि मुख्य व्यवसाय है परन्तु खनन उद्योग भी महत्वपूर्ण है। राय एवं चौधरी (2014) ने शैक्षिक विकास पर शोध करते हुए बताया कि पलामू में साक्षरता दर 63.63% है जो राज्य के औसत से कम है। पाठक (2016) ने लिंगानुपात के संदर्भ में उल्लेख किया है कि पलामू में प्रति 1000 पुरुषों पर 928 महिलाएँ हैं। गुप्ता एवं झा (2020) ने अपने अध्ययन में बताया कि पलामू में नगरीय विकास की गति अत्यंत धीमी है और अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। रंजन (2021) ने भू-स्थानिक विश्लेषण के माध्यम से यह दर्शाया कि जिले में जनसंख्या वितरण असमान है और अधिकांश जनसंख्या उपजाऊ क्षेत्रों में केंद्रित है।

3. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित चार मुख्य उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:

1. पलामू जिले की नगरीय बनावट और नगरीकरण की प्रवृत्ति का विश्लेषण करना

2. जिले की सामाजिक संरचना विशेषकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य सामाजिक समूहों की जनसांख्यिकीय विशेषताओं का अध्ययन करना
3. पलामू जिले की जनसांख्यिकीय विशेषताओं जैसे लिंगानुपात, साक्षरता दर, जनसंख्या घनत्व और जनसंख्या वृद्धि दर का विश्लेषण करना
4. नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक विकास के स्तर की तुलना करना तथा विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना

4. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है जो मुख्यतः द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। शोध में मात्रात्मक शोध डिजाइन का उपयोग किया गया है जिसमें सांख्यिकीय आंकड़ों का संकलन और विश्लेषण किया गया है। आंकड़ों के संग्रहण हेतु भारत की जनगणना 2011 की आधिकारिक रिपोर्ट, झारखंड सरकार के जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के डेटाबेस तथा विभिन्न प्रकाशित शोध पत्रों का उपयोग किया गया है। शोध का प्रतिदर्श पलामू जिला है जिसमें सभी 20 प्रखंडों और 9 नगरीय केन्द्रों को सम्मिलित किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, औसत, अनुपात तथा तुलनात्मक विश्लेषण जैसी सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। भू-स्थानिक वितरण को दर्शाने के लिए सारणीबद्ध प्रस्तुतीकरण का उपयोग किया गया है। अध्ययन में 2011 की जनगणना तक के नवीनतम उपलब्ध आंकड़ों का उपयोग किया गया है क्योंकि 2021 की जनगणना स्थगित कर दी गई थी। शोध में नैतिक मानदंडों का पूर्ण रूप से पालन किया गया है तथा सभी आंकड़े प्रामाणिक स्रोतों से प्राप्त किए गए हैं।

5. परिणाम

तालिका 1: पलामू जिले की कुल जनसंख्या और लिंगानुपात (2011)

विवरण	कुल	पुरुष	महिला	लिंगानुपात
कुल जनसंख्या	19,39,869	10,06,302	9,33,567	928
ग्रामीण जनसंख्या	17,13,866	8,87,551	8,26,315	931
नगरीय जनसंख्या	2,26,003	1,18,751	1,07,252	903
ग्रामीण प्रतिशत	88.35%	-	-	-
नगरीय प्रतिशत	11.65%	-	-	-

स्रोत: भारत की जनगणना, 2011

जनगणना 2011 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि पलामू जिले की कुल जनसंख्या 19,39,869 है जिसमें 10,06,302 पुरुष और 9,33,567 महिलाएँ सम्मिलित हैं। जिले का लिंगानुपात 928 महिलाएँ प्रति 1000 पुरुष है जो राष्ट्रीय औसत 940 से कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में लिंगानुपात 931 है जबकि नगरीय क्षेत्रों में यह 903 है। यह दर्शाता है कि नगरीय क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या तुलनात्मक रूप से कम है। जिले में 88.35% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है जो पलामू की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था को दर्शाता है। नगरीय जनसंख्या मात्र 11.65% है जो अल्प नगरीकरण का संकेत देता है।

तालिका 2: पलामू जिले की सामाजिक संरचना (2011)

सामाजिक वर्ग	कुल जनसंख्या	पुरुष	महिला	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
अनुसूचित जाति	5,36,382	2,77,119	2,59,263	27.65%
अनुसूचित जनजाति	1,81,208	92,577	88,631	9.34%
सामान्य व अन्य	12,22,279	6,36,606	5,85,673	63.01%
कुल जनसंख्या	19,39,869	10,06,302	9,33,567	100%

स्रोत: भारत की जनगणना, 2011

तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि पलामू जिले में अनुसूचित जाति की जनसंख्या 5,36,382 है जो कुल जनसंख्या का 27.65% है। यह प्रतिशत राज्य के औसत से काफी अधिक है। अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 1,81,208 है जो कुल जनसंख्या का 9.34% है। पलामू में मुख्य रूप से उरांव, मुंडा, खरवार और चेरो जनजातियाँ निवास करती हैं। अनुसूचित जाति और जनजाति को मिलाकर कुल 7,17,590 जनसंख्या है जो जिले की कुल जनसंख्या का 36.99% है। यह उच्च प्रतिशत सामाजिक विकास कार्यक्रमों की महत्ता को दर्शाता है। शेष 63.01% जनसंख्या सामान्य और अन्य पिछड़े वर्गों से संबंधित है।

तालिका 3: पलामू जिले में साक्षरता दर (2011)

क्षेत्र	कुल साक्षरता	पुरुष साक्षरता	महिला साक्षरता	साक्षर जनसंख्या
कुल जिला	63.63%	74.30%	52.09%	10,24,563
ग्रामीण	61.30%	73.13%	48.44%	8,67,814
नगरीय	80.54%	87.07%	73.30%	1,56,749

स्रोत: भारत की जनगणना, 2011

साक्षरता के संदर्भ में पलामू जिले की कुल साक्षरता दर 63.63% है जो झारखंड राज्य की औसत साक्षरता दर 66.41% से कम है। पुरुष साक्षरता दर 74.30% है जबकि महिला साक्षरता दर केवल 52.09% है। इस प्रकार लैंगिक साक्षरता अंतर 22.21% है जो चिंता का विषय है। नगरीय क्षेत्रों में साक्षरता दर 80.54% है जो ग्रामीण साक्षरता दर 61.30% से काफी अधिक है। नगरीय क्षेत्रों में बेहतर शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता इस अंतर का मुख्य कारण है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता दर मात्र 48.44% है जो शैक्षिक विकास की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

तालिका 4: पलामू जिले की बाल जनसंख्या (0-6 वर्ष) (2011)

क्षेत्र	कुल बाल जनसंख्या	बालक	बालिका	बाल लिंगानुपात	कुल जनसंख्या का %
कुल जिला	3,29,728	1,69,543	1,60,185	945	17.00%
ग्रामीण	2,98,338	1,53,161	1,45,177	948	17.41%
नगरीय	31,390	16,382	15,008	916	13.89%

स्रोत: भारत की जनगणना, 2011

तालिका 4 में पलामू जिले की बाल जनसंख्या का विवरण प्रस्तुत किया गया है। जिले में 0-6 आयु वर्ग की कुल बाल जनसंख्या 3,29,728 है जो कुल जनसंख्या का 17% है। इसमें 1,69,543 बालक और 1,60,185 बालिकाएँ सम्मिलित हैं। बाल लिंगानुपात

945 बालिकाएँ प्रति 1000 बालक है जो समग्र लिंगानुपात 928 से बेहतर है। ग्रामीण क्षेत्रों में बाल लिंगानुपात 948 है जबकि नगरीय क्षेत्रों में यह 916 है। यह दर्शाता है कि नगरीय क्षेत्रों में बालिकाओं की संख्या तुलनात्मक रूप से कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में बाल जनसंख्या का प्रतिशत 17.41% है जो नगरीय क्षेत्रों के 13.89% से अधिक है।

तालिका 5: पलामू जिले का क्षेत्रफल और जनसंख्या घनत्व (2011)

विवरण	कुल क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या	घनत्व (व्यक्ति/वर्ग कि.मी.)
कुल जिला	4,393	19,39,869	442
ग्रामीण क्षेत्र	4,308.56	17,13,866	398
नगरीय क्षेत्र	84.44	2,26,003	2,677

स्रोत: भारत की जनगणना, 2011

पलामू जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4,393 वर्ग किलोमीटर है जिसमें से 4,308.56 वर्ग किलोमीटर ग्रामीण क्षेत्र और मात्र 84.44 वर्ग किलोमीटर नगरीय क्षेत्र है। जिले का औसत जनसंख्या घनत्व 442 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जो झारखंड राज्य के औसत घनत्व 414 से अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व 398 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जबकि नगरीय क्षेत्रों में यह 2,677 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। नगरीय क्षेत्रों में उच्च जनसंख्या घनत्व नगरों में भीड़भाड़ और बुनियादी सुविधाओं पर दबाव को दर्शाता है। विगत दशक 2001-2011 में जनसंख्या घनत्व में 103 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है।

तालिका 6: पलामू जिले की कार्यशील जनसंख्या (2011)

श्रेणी	कुल कार्यकर्ता	मुख्य कार्यकर्ता	सीमांत कार्यकर्ता	कुल जनसंख्या का %
कुल जिला	7,13,175	2,83,898	4,29,277	36.76%
कृषक	68,895	-	-	9.66%
कृषि मजदूर	95,734	-	-	13.42%
अन्य	5,48,546	-	-	76.92%

स्रोत: भारत की जनगणना, 2011

पलामू जिले में कुल 7,13,175 कार्यकर्ता हैं जो कुल जनसंख्या का 36.76% है। इसमें से 2,83,898 मुख्य कार्यकर्ता हैं जो वर्ष में 6 माह से अधिक कार्य करते हैं और 4,29,277 सीमांत कार्यकर्ता हैं जो 6 माह से कम कार्य करते हैं। सीमांत कार्यकर्ताओं का उच्च प्रतिशत 60.2% रोजगार की अनिश्चितता को दर्शाता है। कुल कार्यकर्ताओं में से 68,895 कृषक हैं जो स्वयं की भूमि पर खेती करते हैं और 95,734 कृषि मजदूर हैं। शेष 5,48,546 कार्यकर्ता अन्य व्यवसायों में संलग्न हैं जिसमें व्यापार, सेवा, निर्माण और खनन कार्य सम्मिलित हैं। कृषि और कृषि मजदूरी से जुड़े कार्यकर्ताओं की संख्या 1,64,629 है जो कुल कार्यबल का 23.08% है।

6. विचार-विमर्श

प्रस्तुत शोध के परिणामों से स्पष्ट होता है कि पलामू जिला एक अल्प नगरीकृत और कृषि प्रधान जिला है। जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार जिले में केवल 11.65% जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है जो झारखंड राज्य के नगरीय जनसंख्या प्रतिशत 24.05% से काफी कम है (भारत की जनगणना, 2011)। यह निम्न नगरीकरण दर कई कारकों से प्रभावित है जिनमें

सीमित औद्योगिक विकास, अपर्याप्त आधारभूत संरचना, भौगोलिक दुर्गमता और रोजगार के अवसरों की कमी प्रमुख हैं। पलामू की सामाजिक संरचना अत्यंत विविधतापूर्ण है जिसमें अनुसूचित जाति की जनसंख्या 27.65% और अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 9.34% है। यह संयुक्त रूप से 36.99% है जो सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की आवश्यकता को रेखांकित करता है (सिन्हा एवं पांडेय, 2019)। जिले में उरांव, मुंडा, खरवार और चेरो प्रमुख जनजातियाँ हैं जो मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती हैं और कृषि पर आधारित हैं। इन समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए विशेष कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

लिंगानुपात के संदर्भ में पलामू का लिंगानुपात 928 है जो राष्ट्रीय औसत 940 से कम है (पाठक, 2016)। विशेष रूप से नगरीय क्षेत्रों में लिंगानुपात 903 है जो चिंताजनक है। यह पुरुष प्रधान प्रवासन और महिलाओं की सीमित गतिशीलता को दर्शाता है। तथापि बाल लिंगानुपात 945 है जो समग्र लिंगानुपात से बेहतर है और यह एक सकारात्मक संकेत है। साक्षरता के क्षेत्र में पलामू की स्थिति चिंताजनक है। जिले की कुल साक्षरता दर 63.63% है जो राज्य के औसत से कम है (राय एवं चौधरी, 2014)। विशेष रूप से महिला साक्षरता दर 52.09% अत्यंत निम्न है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता दर मात्र 48.44% है जो शैक्षणिक हस्तक्षेप की तत्काल आवश्यकता को दर्शाता है। नगरीय और ग्रामीण साक्षरता में 19.24% का अंतर शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता में असमानता को प्रदर्शित करता है। जनसंख्या वृद्धि के संदर्भ में पलामू में विगत दशक 2001-2011 में 26.17% की वृद्धि दर्ज की गई जो राज्य के औसत से अधिक है। यह उच्च जनसंख्या वृद्धि संसाधनों पर दबाव, पर्यावरणीय चुनौतियाँ और विकास कार्यक्रमों के समक्ष बाधाएँ उत्पन्न करती है (गुप्ता एवं झा, 2020)। जनसंख्या घनत्व 442 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जो लगातार बढ़ रहा है।

आर्थिक संरचना के संदर्भ में पलामू में कुल कार्यबल 36.76% है जिसमें 60.2% सीमांत कार्यकर्ता हैं। यह उच्च प्रतिशत रोजगार की अनिश्चितता और मौसमी रोजगार पर निर्भरता को दर्शाता है (मिश्रा, 2017)। कृषि और कृषि मजदूरी पर निर्भरता 23.08% है जो जिले की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था को दर्शाता है। पलामू की भौगोलिक स्थिति, वन क्षेत्र और खनिज संसाधन विकास की संभावनाएँ प्रदान करते हैं परन्तु इनका समुचित दोहन नहीं हो पा रहा है। जिले में कोयला, चूना पत्थर, बॉक्साइट और लौह अयस्क के भंडार हैं परन्तु सीमित औद्योगिक विकास के कारण इनका लाभ स्थानीय जनसंख्या को नहीं मिल पा रहा है (शर्मा, 2018)। नगरीय विकास के संदर्भ में पलामू में 9 नगर पालिकाएँ हैं परन्तु इनमें से अधिकांश में बुनियादी सुविधाओं जैसे जल आपूर्ति, स्वच्छता, सड़क, बिजली और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी है। नगरीय नियोजन और प्रबंधन की दुर्बलता नगरीय विकास में बाधक है (रंजन, 2021)।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि पलामू जिला एक अल्प नगरीकृत, कृषि प्रधान और सामाजिक रूप से विविधतापूर्ण जिला है जिसमें विकास की अपार संभावनाएँ हैं परन्तु अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। जिले में केवल 11.65% जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है जो अत्यंत निम्न नगरीकरण दर को दर्शाता है। सामाजिक संरचना में अनुसूचित जाति और जनजाति की महत्वपूर्ण भूमिका है जो संयुक्त रूप से 36.99% जनसंख्या हैं। साक्षरता दर 63.63% है जो राज्य के औसत से कम है और विशेषकर महिला साक्षरता में सुधार की आवश्यकता है। लिंगानुपात 928 है जो चिंताजनक है परन्तु बाल लिंगानुपात

945 एक सकारात्मक पहलू है। जिले की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है और 60.2% कार्यकर्ता सीमांत श्रेणी में हैं जो रोजगार की अनिश्चितता को दर्शाता है। पलामू के संतुलित विकास के लिए नगरीय आधारभूत संरचना का विकास, शैक्षणिक सुविधाओं का विस्तार, रोजगार के अवसरों का सृजन, खनिज संसाधनों का समुचित दोहन और सामाजिक समावेशन आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत की जनगणना (2011). *जिला जनगणना पुस्तिका - पलामू*. नई दिल्ली: भारत सरकार, गृह मंत्रालय, जनगणना आयुक्त कार्यालय.
2. गुप्ता, आर., एवं झा, एस. (2020). झारखंड में नगरीकरण की प्रवृत्तियाँ और चुनौतियाँ. *भारतीय भूगोल पत्रिका*, 45(2), 78-92.
3. जनगणना आयुक्त (2011). *झारखंड जिला जनगणना आंकड़े 2011*. रांची: झारखंड सरकार.
4. झारखंड सरकार (2013). *पलामू जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2012-13*. रांची: योजना एवं विकास विभाग.
5. कुमार, आर., एवं सिंह, पी. (2015). पलामू जिले का ऐतिहासिक और प्रशासनिक विकास. *झारखंड इतिहास शोध पत्रिका*, 12(3), 45-62.
6. मिश्रा, वी. (2017). पलामू जिले की आर्थिक संरचना और विकास की संभावनाएँ. *आर्थिक अध्ययन*, 28(4), 112-128.
7. पाठक, एस. (2016). झारखंड में लिंगानुपात और महिला सशक्तिकरण. *समाज और विकास*, 15(1), 34-48.
8. राय, डी., एवं चौधरी, एम. (2014). पलामू में शैक्षिक विकास और चुनौतियाँ. *शिक्षा अध्ययन पत्रिका*, 22(2), 67-81.
9. रंजन, ए. (2021). भू-स्थानिक तकनीक से झारखंड के जिलों का जनसांख्यिकीय विश्लेषण. *भू-स्थानिक अनुसंधान*, 9(3), 156-172.
10. वर्मा, बी. (2012). पलामू का इतिहास: चेरो राजवंश का योगदान. *मध्यकालीन भारत शोध*, 18(4), 89-106.
11. शर्मा, के. (2018). पलामू की भौगोलिक संरचना और प्राकृतिक संसाधन. *भारतीय भूगोल समीक्षा*, 33(2), 124-139.
12. सिन्हा, आर., एवं पांडेय, एस. (2019). झारखंड की जनजातियाँ: सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन. *जनजातीय अध्ययन पत्रिका*, 26(1), 45-63.
13. अग्रवाल, पी. (2016). *ग्रामीण और नगरीय विकास: झारखंड का परिप्रेक्ष्य*. नई दिल्ली: ज्ञान पब्लिशिंग हाउस.
14. चक्रवर्ती, एस. (2018). झारखंड में अनुसूचित जाति और जनजाति का सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण. *सामाजिक न्याय शोध*, 14(3), 98-115.
15. दास, टी. (2019). पलामू में जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरणीय प्रभाव. *पर्यावरण और समाज*, 11(2), 72-88.
16. झा, यू. (2017). झारखंड के जिलों में साक्षरता का तुलनात्मक अध्ययन. *शैक्षिक शोध समीक्षा*, 19(4), 134-149.
17. प्रसाद, एम. (2020). पलामू की खनिज संपदा और औद्योगिक विकास. *खनिज और ऊर्जा अध्ययन*, 7(1), 56-71.
18. मुखर्जी, डी. (2015). झारखंड में नगरीय स्थानीय शासन और प्रशासन. *लोक प्रशासन पत्रिका*, 31(2), 88-104.
19. सिंह, आर. (2021). भारत में जनजातीय विकास: नीतियाँ और कार्यक्रम. *विकास अध्ययन*, 25(3), 112-130.

20. त्रिपाठी, वी. (2019). ग्रामीण-नगरीय प्रवासन और इसके प्रभाव: झारखंड का अध्ययन. *जनसंख्या अध्ययन पत्रिका*, 17(4), 145-162.

IJMRR